IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 12, Issue 3, May-June 2025

Impact Factor: 8.152

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203091

कांकेर को पहचान दिलाती जिला के पर्यटन स्थल

डॉ. टुपेश कुमार कोसमा

Email- tupeshkosma@gmail.com

Mobile No.- 9407661994, 7089061994

प्रस्तावना – कांकेर जिला के भारत देश के छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर क्षेत्र में स्थित है। पहले मातृप्रदेश मध्यप्रदेश का हिस्सा था। 1 नवम्बर 2000 में मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीगसढ़ प्रदेश बनाया गया था। इसके पूर्व में ही कांकेर जिला वर्ष 1998 में ही पूर्ण व स्वतंत्र जिला बनाया गया था। कांकेर का इतिहास पाषाण युग पुराना है। रामायण और महाभारत जैसे पौराणिक महाकाव्यों के अनुसार यह स्थान घने जंगलो से भरा हुआ था और मानव जाति के लिए सुलभ नहीं था। बहुत समय बाद यह स्थान कई संतों और आध्यात्मिक गुरूओं जैसे कंक, लोमेश, श्रृंगी और अंगिरा का कुटिया/ आश्राम था। पहले के निशान के अनुसार यह स्थान बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित था। वर्ष 106 ईस्वी के दौरान स्थान को सातवाहन राजवंश द्वारा शासन किया गया था। महान चीनी यात्री, विद्वान और बौद्ध भिक्षु ने कांकेर के संबंध में कई संदर्भ साझा किये हैं।

1. **देवधारा – पर्यटन स्थल** – देवदशहरा (रानवाही भानुप्रतापपुर) देव दहरा पर्यटन की दृष्टि से एवं धार्मिक दृष्टिकोण से क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण स्थान है। क्षेत्र के लोग इस स्थान को पाट देवों की क्रीड़ा स्थली मानते हैं। पाट देवताएं यहां कुछ समय के लिए निवास करते हैं। देवदहरा स्थान पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसके साथ जनश्रुति के अनुसार चार पाट देवों की कहानियों जुड़ी हुई हैं। खण्डी नदी आगे बढ़ते हुए। ग्राम लोहत्तर के निकट खण्डी घाट से होकर गुजरती है। लोक मान्यताओं के अनुसार अति प्राचीन काल में खण्डी घाट के निकट भेजरगढ़ में कडंरा राजाओं का राज था। भेजरगढ शहर में उनका व्यापारिक बाजार भी था। वहां राजा का गाढ़ा चलता था। प्राचीन काल के कडंरा राजा के चारों पाट देव भाई शेर बनकर कडंरा राजा और तुलई परिवार के बच्चों को खा रहे थे। खाने वाले कौन से जीव–जन्तु हैं,उसका पता लगाने के लिए झाड़ी में छुपकर ताक रहे थे।

2. **दन्तेश्वरी गढ़ बांसला–** यह स्थान प्रकृति के दृष्टि से अत्यंत रमणीय हैं चारो ओर से हराभरा साल वृक्षों से घिरा पहाड़ी के नीचे बसा यह गाँव पर्यटन की दृष्टि से बहुत ही उपयुक्त है। प्रकृति के गोद में माई दंतेश्वरी का मंदिर और उसके तालाब लोगों का मन अनायास अपनी ओर आकर्षित करती है। यहाँ का शांत वातावरण में पक्षियों की चहचहाहट मन को आंनद से सराबोर कर देता है यहाँ का मनोरम दृश्य देखकर लोग खिचे चले आते है और यहाँ पर आकर शांति का अनुभव करते हैं।

पर्यटन महत्व एवं स्थान – छत्तीसगढ़ प्रांत के दक्षिण भाग में स्थित बस्तर अंचल प्राचीन काल से ही धार्मिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्द रहा है। माई दंतेश्वरी इस अंचल की प्रमुख देवी है। जिसके प्रति यहां के मूल निवासी आदिवासियों के अलावा सभी जाति धर्म और सम्प्रदाय के लोगों की अटूट आस्था बनी हुई है। दंतेवाड़ा में स्थित माई दंतेश्वरी मंदिर बस्तर ही नहीं पूरे देश विदेश में प्रसिध्द हैं। यहाँ दूर–दूर से श्रध्दालुअपनी–अपनी मनोकामनाएँलेकर आते हैं, जिन्हें माता पूर्ण करती है। दंतेवाड़ा के अलावा जगदलपुर बस्तर बडेडोंगर, छोटेडोंगर, प्रतापपुर, नारायणपुर व गढ़बांसला में भी माई दंतेश्वरी स्थापित हैं। इन मंदिरों में जन भावनाओं के साथ–साथ

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203091

धार्मिक व ऐतिहासिक मान्यतायें जुड़ी हैं। गढ़बांसला (उत्तर बस्तर) एक ऐतिहासिक तथा धार्मिक आस्था की भूमि रही है इसे प्राचीन काल में कांकेर रिसायत की दूसरी राजधानी के प्रतिवेदन के अनुसार 1920 के पूर्व यह तहसील मुख्यालय रहा है। गढ़ बांसला प्राचीन काल से धार्मिक, सामाजिक व पुरातात्विक वैभव को समेट रखा है। चौरासी परगना के देवी–देवता यहां विराजमान है। जिसमें माई दंतेश्वरी की मंदिर स्थापना के बाद गढ़ बांसला धार्मिक एवं पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हुआ है। लोक मान्यताओं के अनुसार कांकेर रियासत का वास्तविक संस्थापक राजा होहोवंशी था, जो कि कण्डरा राजा की राजधानी सर्वप्रथम वर्तमान लोहत्तर क्षेत्र में थी। राज्य विस्तार करते हुए कण्डरा राजा ने बांसला को दूसरी राजधानी बनाया। बांसला में ही जब कण्डरा राजा को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो उसकी नाभी को बांस की पत्ती से काटा गया। इसी आधार पर नाम गढ़ बांसला पड़ा।

3. **टोंगा पथरा–** गढ़ बांसला नैसर्गिक सपंदा सा परिपूर्ण है। टोंगा पथरा बांसला की पहाड़ी पर स्थित प्रकृति की एक अनुपम कृति है। जो एक विशाल पत्थर के सहारे टिका हुआ है। टोंगा पत्थर से संबंधित जनश्रुति यह है कि कभी लिंगों देव इस स्थान पर शिकार खेलता था। वह टोंगा पत्थरा के माध्यम से वन्य प्राणियों का शिकार करता था। किसी दिन इस पत्थर को पैरों के सहारे टिका कर टोंगा खेल रहा था कि अचानक उसका तोलगी (पहना हुआ धोती नुमा कपड़ा, लंगोट) पानी से भीगने लगा और पीछे देखा तो बांसला पहाड़ से खडी पहाड़ तक पानी लबालब भरा हुआ था। लिंगो ने गुस्से में आकर अपना धनुष बाण उठाया और अवरोधित खण्डी पहाड़ पर सीधा निशाना साध कर तीक्ष्ण प्रहार किया, जिससे दुर्गुकोंदल विकास खण्ड के चेमल ग्राम में स्थित खण्ड़ी घाट पहाड़ टूट गया तब खण्डी नदी का निर्माण हुआ और इसमें भरा पानी बह गया।

जूनागढ़ – मांई दंतेश्वरी मंदिर के उत्तर पूर्व दिशा में लगभग 500 मीटर की दूरी पर जूनागढ़ का खण्डहर रियासत कालीन इतिहास का बया कर रहीं है। कहा जाता है कि कांकेर रियासत के राजा पदमसिंह के 4 पुत्र थे। नरहरदेव, लक्ष्मण देव, शिवचरण देव तथाधनश्यामदेव, नरहरदेव सबसे बड़ा पुत्र नरहरदेव उनके रियासत के प्रतिष्ठित गांव गढ़ बांसला में निवास करता था। गढ़ बांसला में जूनागढ़ का निर्माण के उसकाल में किया गया था।

जूनागढ़ की आकृति वर्गाकार है। जिसमें चारों कोनों की ऊचाई अपेक्षाकृत अधिक है। संभवतः सुरक्षा की दृष्टि से यह प्रहरियों का स्थान रहा होगा। जूनागढ़ के दक्षिण में बागवानी किया जाता था। जहां प्रमाण के तौर पर आम का बगीचा भी मौजूद है। पूर्व दिशा में तालाब का अवशेष है। अपने पिता राजा पदमसिंह की मृत्यु के बाद 1853 ई. में राजकुमार नरहदेव कांकेर रियासत के राजा बने। सन् 1903 में राजा नरहरदेव की मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि नरहरदेव गढ़ बांसला के हल्बा आदिवासियों की सेवा सत्कार से अत्याधिक प्रभावित था।

4. **बोगर पाट देव –** पुरातात्विक संपदा का अधिलेखीकरणपुरातात्विक स्थान बोगरपाट देव में रहस्यमयि पत्थरों से बनी मूर्तियाँ बोगर पाट देव में रखी मूर्तियों स्लेटी पत्थरों से बनी है। आसपास के क्षेत्रों मेंकहीं भी दूर–दूर तक इस प्रकार के पत्थर नहीं पाये जाते हैं। इन मूर्तियाँ में बारीक नक्काशी की गई है। जो कि अभी भी स्पष्ट एवं सुन्दर नजर आती है। प्राचीन काल में इस प्रकार की नक्काशी सभी को आश्चर्य चकिंत करते हैं।वर्तमान मशीनी युग में भी इस प्रकार की नक्काशी संभव नहीं। क्षेत्र में नहीं मिलने वालों पत्थरों की मूर्तियाँ यहां पाया जाना आश्चर्यजनक तो है ही साथ ही इनका किसी को भी कोई जानकारी न होना और भी अधिक विस्मयकारी है।ये मूर्तियाँ किसके द्वारा किस प्रयोजन से और किस काल में लाई गई? इन सवालों का जवाब किसी के पास नहीं है। जो इन मूर्तियों की अति प्राचीन होने की धारणाा को अधिक पुष्टि करते हैं।

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203091

लोक मान्यता के अनुसार उस युग में छःमासी रात व छःमासी दिन हुआ करता था। युद्ध रात्रि में ही होता था। दोनों राजाओं के बीच युद्ध इतना लम्बा चला है कि छःमासी रात ढलने की कगार पर आ गई। युद्ध लड़ते–लड़ते राजाओं और उनके सैनिकों को इस बात का पता भी नहीं चला की कब दिन हो गई।

तरान्दुल घाटी– तरांदुल घाट चढ़ते समय पाहड़ी के तल के बांयी ओर लगभग 1 कि.मी. जलमार्ग के चढ़ाई में एक सुन्दर मनमोहक झरना है। जो पत्थरों के हृदय को चीर कर घरातल तक पहुंचने के लालसा में बड़े चट्टानों के बीच से जल मार्ग बनाते हुये एक लम्बवत् झरने के रूप में तब्दिल हो जाता है। ग्रामीण इसे पोटोष्का कहते हैं। पोटोष्का झरना ग्राम बनोली के वन अंचल क्षेत्र में है। पोटोष्का के जल स्त्रोत का उद्‌गम स्थान तरान्दुल से है। गोण्डी बोली में पोटोष्का का शब्दिक अर्थ बांस के छोटे नाली वाले खण्ड से है। जिसका उपयोग बस्तर में गोंचा पर्व (रथयात्रा) के दौरान तुपकी के रूप में किया जाता है। तुपकी में (जंगली फल) डालकर पत्ते बांस का लकड़ी से दबाव डालने पर पेइंग बांस के अंधेरे सुरंग से दूरी तय कर तेज ध्वनि से बाहर निकलता है। यदि झरने के सौदर्य को दूर से देखा जाय तो वह तुपकी के समान सुरंग से निकलने वाली जलधारा प्रतीत होती है। सम्भवत इसी विशेषता के कारण इस स्थल को पोटोष्का कहा गया होगा।

पर्यटन महत्व एवं स्थान– बस्तर संभाग के कांकेर जिला प्राचीन इतिहास और पुरात्विक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। जिले के अनेक स्थलों में प्राचीन कला अवशेषों के भग्नावेश प्राप्त हुये है। बस्तर अंचल के अनेक राज वंशों ने राज किया। जिसमें 5वीं शाताब्दी ईश्वी सन् से लेकर दसवीं शताब्दी तक नल वंश, 11वीं शताब्दी से 14 शताब्दी तक छिंदक नागराज वंश, 15वीं शताब्दी प्रारंभ से लेकर भारतीय गणतंत्र के विलय तक का काकतीय चालुक्य राजवंश राजसत्ता रहीं है। इन्ही संबंध में कई शिलालेख ज्ञात वा प्रकाशित है।

आखेट गृह – राजकीय व्यवस्था में राजाओं ने बस्तर के अनेक सूरम्य वनांचलों में आखेट गृह का निर्माण कराया था। जहां ग्रीष्म अवकाश में आखेट के साथ–साथ कुछ समय वनों में व्यतित करते थे। पहाड़ों पर ज्ञात जल स्त्रोतो के उपलब्धता के आधार पर उक्त स्थल पर आखेट गृह (शिकार भवन) का निर्माण होता था। वातानुकूल इन स्थलों की विशेषता होती थी ग्रीष्म काल में भी ठण्डकता बनी रहती थी। ऐसे ही कांकेर के राजा भानुप्रतापदेव व उदय प्रतापदेव के काल में ग्राम तरान्दुल (कोरर) वि.ख भानुप्रतापपुर के पहाड़ में आखेट गृह बना हुआ था। जो वर्तमान में सरंक्षण के अभाव में खण्डर हो गया है। इस आखेट गृह को गर्म रखने के लिए एक पृथक कमरा थी। जहां विशाल चिमनी बनी थी। कमरे में आग जलाने के लिए अर्द्ध गोलाकर खण्ड बना था।

कच्चे लोहारीन दाई– कच्चे की देवी लोहार–लोहारिन दाई जिला उ.ब. कांकेर के छोटा सा गांव कच्चे बालोद जिले की सीमा में भानुप्रतापपुर से उत्तर दिशा की ओर दल्ली राजहरा मार्ग पर लगभग 13 कि.मी. की दूरी पर ग्राम कच्चे बसा हुआ है। यहां कच्चा लोहा भरपूर मात्रा में होने के कारण इस ग्राम का नाम कच्चे पड़ा और इसका एक कारण यह भी हो सकता है, कि गोंडी बोली में लोहा को कच्च कहा जाता है। ग्राम के पश्चिमी छोर पर स्थित आरीडोंगरी पहाड़ी पर देवी लोहार–लोहारिन माता विराजमान थी। यहां निरन्तर अयस्क बनाने का कार्य होने के करण माइंस प्रबंधन की लापरवाही एवं उपेक्षा से यहां स्थान नहीं रहा।

7. **साल्हे की बारसा वाली मां –** साल्हे ग्राम भानुप्रतापपुर क्षेत्र के प्राचीनतम गांव में एक है। प्राचीनकाल में यहां बेहद घने जंगल थे। इन घने जंगलों में साल के वृक्ष बहुतायत में थे। यहां साल खपरी (पैंगो लिन) नामक जीव

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203091

बहुत अधिक पाया जाता है। इसी कारण इस गांव का नाम साल्हे पडा साल्हे की मां दन्तेश्वरी 12 परगना क्षेत्रों की आराध्य देवी है। इसी कारण माता का नाम बारसा वाली के नाम से प्रचलित है। लोक मान्यताओं के अनुसार बारसा वाली मां बस्तर की आराध्यदेवी मां दन्तेश्वरी का स्वरूप है। देवी कब और किस तरह यहां अवतरित हुई और उन्हें किसके द्वारा स्थापित किया गया? यह जानकारी उपलब्ध नहीं है।

8 ग्राम भेजा– मेरे द्वारा विख मुख्यालय से 20 किमी. दूरी ग्राम भेजा व तेलेम्मा मोटर सायकल से सफर कर शाम 5: 30 बजे पहुंच कर ग्रामीण श्री तुरसिंह तेता, श्री रामसिंह दुग्गा, श्री चम्मुराम तेता, श्री राजकुमार तेता से संपर्क कर ग्राम भेजा में ऐतिहासिक पहाड़ी के बारे में जानकारी प्राप्त किये जो कि लैयन (लाईन) डोंगरी के नाम से विख्यात है, जो कि ग्राम भेजा से लगा हुआ है।

धार्मिक मान्यताएं – पहाड़ी में प्राचीन काल से ही देवी–देवता का वास स्थान है। जिसमें वहां की मान्यताएं है कि पहाड़ के ऊपर एक कपाट द्वार नामक एक रास्ता है। जिसके माध्यम से खोह (गुफा) के अन्दर प्रवेश करते थे। ग्रामीणों के द्वारा हमें जानकारी प्राप्त हुआ, कि कपाट द्वार एक अद्भुत चमत्कारी पत्थर है, जो कि विशेष समय पर खुलता रहा है। जिसमे आदि काल में हमारे जनजाति के चेलिक, मोटियारिनों के द्वारा विशेष परब में धारण करने के लिए उस कपाट द्वार से सभी लया लयोर जो नृत्य करते थे।

9. **कांकेर में पर्यटन स्थल :– कांकेर पैलेस –** इस शहर का सबसे लोकप्रिय गंतव्य कांकेर पैलेस है और इस जगह की विरासत क्षेत्र के प्राचीन प्रभुता को परिभाषित करती है। महल 19वीं शताब्दी में बनाया गया था और बाद में फिर से इसका निर्माण किया गया था। एक अद्भुत महल जहां महेमानों के लिए आवास उपलब्ध है और शीर्ष रिसाट्र्स में से एक है।

10. **चर्रे–मर्रे–** यह जिले का प्रसिद्ध झरना और प्रकृति की गोद से निकला हुआ है यहां शांत वातावरण में उपर से जब पानी गिरता और नीचे पत्थर के चट्टान के साथ टकराने के बाद जो आवाज आती है वो अपनी ओर पर्यटकों को आकर्षित करती है। यह संयोग है कि प्रकृति हमें एक बहुत ही मनोरम और सुंदर दृश्य प्रस्तुत कर पर्यटकों को अपनी ओर लुभाता है। एक शांत प्रिय जगह के साथ रोमांचित भी करता है। यह भी एक आदर्श गंतव्य है।

11. **गढ़िया पहाड़ –** यह कांकेर का हृदय स्थल है। जहां आपको रहस्यमय गुफा मिलेगी जहां प्रसिद्ध कंदरा राजा अपने परिवार के साथ छिपते थे। कांकेर के राजा भानुप्रतापदेव अक्सर इस पहाड़ पर शिकार करने के लिए जाया करते थे। इस पहाड़ के उपर सोनाई–रूपई तालाब स्थित है जहां पूरे 12 माह पानी रहता है जो कभी नहीं सूखता।

कांकेर जिला में इनके अलावा दूध नदी, मलॉज कुडुम, ईशान वन(राम वाटिका) चारामा, शिवानी मंदिर नरहरपुर, दुर्गूकोंदल में बंजारी मंदिर हाहालद्दी, खंडीघाट चेमल, सोनादाई मंदिर लोहत्तर, रक्साहाड़ा अंतागढ़, परलकोट जलाशय है, जो जिले की पर्यटन दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. अग्रवाल प्रेमचंद ह्यूमन ज्यॉग्रफी ऑफ बस्तर डिस्ट्रिक्ट, गर्ग ब्रदर्स प्रेस इलाहाबाद 1974, पृ.क्र. 98
2. बेहार रामकुमार "बस्तर एक अध्ययन", मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 1995 (पृ.क्र. 19)
3. बेहार रामकुमार बस्तर आरण्यक, जीत स्टेशनरी महल, जगदलपुर, बस्तर, छत्तीसगढ़ – 1983, पृ.क्र. 30

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203091

4. बेहार रामकुमार – छत्तीसगढ़ का इतिहास, छ.ग.राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर–2018, पृ.क्र. 98
5. गुप्ता प्यारेलाल– "प्राचीन छत्तीसगढ़, रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, प्रकाशन– 1973, पृ.क्र. 32
6. जगदलपुरी लाला– बस्तर लोक–कला–संस्कृति, विश्व भारती प्रकाशन, नागपुर, पृ.क्र. 36
7. मिश्रा रमेन्द्रनाथ– ब्रिटिशकालीन छत्तीसगढ़ का प्रशासनिक इतिहास, पुस्तक प्रतिष्ठान, रायपुर– 1952, पृ.क्र. 46
8. मिश्र रमेन्द्रनाथ– छत्तीसगढ़ का इतिहास, शताब्दी प्रकाशन, रायपुर–2003, पृ.क्र. 17
9. मिश्र पी.एल. प्रकाशन, नागपुर दि पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ छत्तीसगढ़, विश्व भारती 1979, पृ.क्र. 78
10. श्रीवास्तव प्रदीप 113 भारत का जनजातीय जीवन, प्रियंका पब्लिकेशन्स, पृ.क्र. 113
11. सिंह राकेश जनजातीय विकास विविध पक्ष स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ.क्र. 48
12. सिंह सत्यप्रकाश पृ.क्र. 16 आमचो बस्तर, शिक्षादूत ग्रंथालय प्रकाशन, रायपुर– 2012, पृ.क्र. 16
13. शर्मा अरविंद छत्तीसगढ़ का राजनैकि इतिहास, अरपा प्रकाशन. बिलासपुर– 2002, पृ.क्र. 21
14. डॉ. मालती तिवारी, छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग उत्तर बस्तर कांकेर जिले की पर्यटन स्थल पर प्रकाशित।

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 8.152

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com